Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

"अमृतसर आ गया है" कहानी में देश विभाजन से उपजी साम्प्रदायिकता

Babita*

M.A. (Hindi) NET JRF, Hisar

शोध सार:- *"अमृतसर आ गया है" भीष्म साहनी द्वारा रचित एक बहुचर्चित कहानी है जो भारत पाक विभाजन के परिदृश्य को प्रस्तुत करती है। विभाजन की घोषणा के उपरांत भड़की साम्प्रदायिकता की भावना को साकार रूप देने का एक सफल प्रयास साहनी जी ने अपनी "अमृतसर आ गया है" कहानी में बखूबी किया है। विभाजन के समय जो चिन्गारी लोगों के हृदय में सुलग रही थी वह साम्प्रदायिकता दंगो के रूप में सामने आई। कहानी में भीष्म जी ने एक रेलगाड़ी का वर्तमान पाकिस्तान के किसी शहर से निकलकर अलग- अलग स्टेशनों से होते हुए अमृतसर पंहुचने तथा इस रेलयात्रा के दौरान होने वाले तनाव, विवाद को छोटी- छोटी घटनाओं के द्वारा दर्शाया है। जैसे-जैसे रेलगाड़ी आगे की ओर बढ़ती है, वैसे-वैसे तनाव बढ़ता जाता है। कुछ पठान यात्रियों द्वारा हिन्दू यात्रियों के उपहास व दुर्व्यवहार को इस कहानी में प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। विभाजन की त्रासदी ने लाखों लोगों को भावनात्मक और विचारात्मक धरातल पर ही नही बल्कि मनोवैज्ञानिक तथा आत्मिक स्तर पर भी प्रभावित किया।*

मुख्य शब्द:- *साम्प्रदायिक, उर्वर, उपरांत, भयभीत, चिन्गारी, अनभिज्ञ, बेईज्जत।*

----------X----------

समकालीन कहानीकारों में भीष्म साहनी का स्थान अग्रण्य है। एक कहानीकार के रूप में इनको ख्याति अपनी तीखी रचना प्रकिया, कौशल तथा वैचारिक पृष्ठभूमि के कारण मिली। भीष्म साहनी हिन्दी के उन चंद कथाकारों में से हैं जिन्होने विभाजन और साम्प्रदायिक दंगों को करीब से देखा तथा अपने कथा साहित्य में गहाराई के साथ अभिव्यक्त किया। साम्प्रदायिकता की समस्या आज हमारे देश की प्रमुख समस्याओं में से एक है। साम्प्रदायिक तनाव को विस्तृत फलक पर अपनी लेखनी के साथ प्रस्तुत करने का सफल प्रयास भीष्म साहनी ने अपनी कहानी "अमृतसर आ गया है" में किया है। "अमृतसर आ गया है" कहानी का प्रमुख स्वर भारत-पाक विभाजन के दौरान विकसित हुए साम्प्रदायिक मतभेद को उजागर करना है। कहानी में रेलगाड़ी का झेलम स्टेशन से निकलकर अलग-अलग स्टेशनों से होते हुए अमृतसर पंहुचना तथा इस सफर में होने वाली छोटी-छोटी और महत्वपूर्ण घटनाएं इस कहानी के केन्द्र में है।

देश विभाजन भारतीय इतिहास की एक बहुत बडी त्रासदी है। यह भी एक विचित्र विरोधाभास है कि जिस दिन हमारा देश आजाद हुआ उसी दिन देश का विभाजन भी हुआ। जिन मूल्यों और मान्यताओं की रक्षा के लिए हम स्वाधीनता संग्राम में संघर्ष करते रहे, विभाजन के समय उन्ही मूल्यों और मान्यताओं की धज्जियां उडती हुई दिखाई दी।

"हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच दंगों के सिलसिले को समाप्त करने के लिए देश का विभाजन हुआ। देश के विभाजन के कारण वही चीज ऐसी भयंकर सूरत में प्रदर्शित हुई जिससे बचने के लिए विभाजन को स्वीकार किया गया था। ऐसी परिस्थिति की कल्पना भी नही की जा सकती, जिसे देखते हुए आदमी की बुद्वि और चिंतन पर संदेह होने लगता है। छः लाख बच्चे, औरतें और मर्द मारे गये। उन्हे मारने, बलात्कार और अत्याचार के लज्जापूर्ण और क्रूरतापूर्ण ढंग पागलों की तरह अपनाएं गए। डेढ करोड लोग उजड़े और पुनः बसने के लिए उन्हे ऐसे इलाकों में आबाद होना पडा, जहां न स्वागत करने वाला कोई शुभचिंतक था, ना कोई हाल पूछने वाला हितैषी। ऐसा कभी नही हुआ। आज भी लोग आकलन करते हैं कि हिन्दुओं ने अधिक पशुता का प्रदर्शन किया था या मुसलमानों ने।"1

www.ignited.in

विभाजन ने लोगों को अंदर तक प्रभावित किया ना केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी लोगों के जीवन पर प्रभाव डाला।

साम्प्रदायिकता का अर्थः-

अगर साधारण शब्दों में कहा जाए तो समुदाय का अर्थ पंथ, मार्ग या रीति से है। जब किसी वर्ग विशेष के लोग किसी विश्वास, आस्था और मान्यता को मानते हैं तो वह सम्प्रदाय विशेष कहलाता है और जब एक सम्प्रदाय अपने धर्म को श्रेष्ठ सिद्व करने के लिए दूसरे धर्म को नीचा दिखाने का प्रयास करता है तो साम्प्रदायिकता का जन्म होता है। "साम्प्रदायिकता उस घोड़े का नाम है जिसकी आंखों पर पटटी बांध दी गई और जिसे उस रथ को जोत दिया है जिसमें सवार शिक्षित, अशिक्षित, आस्तिक-नास्तिक, पाखंडी-धार्मिक, मूर्ख और पंडित आदि सभी सवारी कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में उन सवारियों का नतीजा क्या होगा इसका अनुमान लगाया जा सकता है"2

"अमृतसर आ गया है" कहानी का मुख्य स्वर भारत-पाक विभाजन से पहले की परिस्थितियों को बताना है। हिन्दुस्तान व पाकिस्तान का विभाजन इतने कम समय में हो गया था कि लोगों को सोचने का अवसर तक प्राप्त नही हुआ कि यह सब क्या हो रहा है? इससे पहले कि जनता अपने भविष्य या परिवार के बारे में कुछ सोच पाती उसे जबरदस्ती एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए बाधित कर दिया गया। जनता में साम्प्रदायिक तनाव फैल गया। ग्रामीण हो या शहरी, हिन्दु हो या मुसलमान सभी साम्प्रदायिकता के रंग में रंगे जा चुके थे। "अफवाहों, बहकावें के प्रभाव से ग्रामीण जन जीवन में साम्प्रदायिकता के लिए उर्वर भूमि तैयार हो गई लेकिन इसके उपरांत भी हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की हकीकत को लोग समझ नही पा रहे थे"3

इस कहानी के सभी पात्र चाहे पठान हो या दुबला बाबू हो या रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे अन्य यात्री हों। सभी पात्र मध्यवर्गीय तथा शोषित हैं तथा इस बात से अनभिज्ञ हैं कि पाकिस्तान क्यों बन रहा है?। अमृतसर जा रही रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे ये पात्र भारत व पाकिस्तान के विभाजन को लेकर अपने-2 विचार प्रस्तुत करते हैं। "मेरे सामने बैठे सरदार जी बार-2 मुझसे पूछ रहे थे कि पाकिस्तान बन जाने पर जिन्ना साहब बम्बई में ही रहेंगे या पाकिस्तान में जाकर बस जाएगें ओर मेरा हर बार यही जबाव होता बम्बई क्यों छोडेगें, पाकिस्तान में आते जाते रहेगें, बम्बई छोड देने में क्या तुक है।"4

कहानी का प्रारंभ अमृतसर जा रही ट्रेन में एक पठान यात्रियों द्वारा एक दुबले पतले बाबू के मजाक से होता है। मांस खाने को लेकर वे लोग उसका उपहास करते हैं। "मांस नही खाता ए बाबू तो जाओ, जनाना डिब्बे में बैठो, इधर क्या करता है।"5

इस प्रकार का उपहास कहीं ना कहीं दुबला बाबू को अंदर ही अंदर व्याकुल किए जा रहा था। वो इसे साम्प्रदायिकता से जोड़ कर देख रहे थे। जब गाड़ी वजीराबाद स्टेशन पर पंहुचती है तो एक हिन्दु यात्री अपनी पत्नी और बेटी के साथ उस डिब्बे में सवार होता है लेकिन उन पठान यात्रियों के द्वारा उसका विरोध किया जाता है। वह बार-बार उनसे निवेदन करता है। "टिकट है जी मेरे पास, मैं बेटिकट नही हूँ। लाचारी है। शहर में दंगा हो गया है। बडी मुष्किल से स्टेशन तक पंहुचा हूँ।"6

उन पठान यात्रियों को उनका डिब्बे में सवार होना लाजमी नही था। "और पठान ने आव देखा न ताव आगे बढ़कर ऊपर से ही उस मुसफिर के लात जमा दी। पर लात आदमी को लगने की बजाए उसकी पत्नी के कलेजे में लगी ओर वह वहीं हाय- हाय करती बैठ गई।"7

धर्म की आड़ लेकर हिन्दु और मुसलमानों में जो विवाद बढ़ रहा था उसका एक रूप यहां भी दिखाई दे रहा था। वजीराबाद एक मुस्लिम बहुल इलाका था। इसलिए उन पठानों ने वहां उस हिन्दु यात्री के चढ़ने पर उससे दुर्व्यवहार किया क्योंकि वे उस इलाके में अपने सम्प्रदाय को सर्वश्रेष्ठ समझ रहे थे। इसलिए यह भावना उनके मन में बार-बार आ रही थी। उनके इस व्यवहार से दुखी होकर वह हिन्दु यात्री अपनी पत्नी और बेटी के साथ गाड़ी से उतर जाता है। गाड़ी के इस डिब्बे में साम्प्रदायिक तनाव बहुत ज्यादा बढ़ जाता है और दुबला बाबू उसे सबसे अधिक महसूस करता है। वह भयभीत होकर दो सीटों के बीच फर्श पर लेट जाता है तो पठान फिर से उसका उपहास करते हैं। "ओ बेगैरत, तुम मर्द ए कि औरत ए? सीट पर से उठकर नीचे लेटता ए। तुम मर्द के नाम को बदनाम करता ए।"8

कहीं ना कहीं ये उपहास भरी बातें उस माहौल में तनाव को बढा रही थी। जब गाडी हरबंसपुरा (जो एक मुस्लिम बहुल इलाका है) से निकलकर अमृतसर की बढी तो दुबला बाबू शेर की भांति उन पठानों पर दहाडता है क्योंकि उसके मन में भी कहीं ना कहीं साम्प्रदायिकता की चिंगारी भडक रही थी। किस प्रकार उन हिन्दु यात्रियों को उन्होने बेइज्जत किया था। "अपने घर में शेर बनता था, अब बोल तेरी मैं.....पठान बनाने वाले की....."9

www.ignited.in

"नीचे उतर तेरी मां.....हिन्दु औरत को लात मारता है, हरामजादे तेरी उस....."10

दुबला बाबू का रेलगाडी के अमृतसर आने के बाद पठानों को गाली देना और खुद को सुरक्षित पाकर शेर की तरह ऊंची आवाज में पठानो पर दहाडना, यह दर्शाता है कि अब वो भयमुक्त हो चुका है और पठानों में भय व्याप्त हो चुका है।" ओ बाबू बक-बक नही करो, ओ खंजीर के तुख्म, गाली मत बको, अमने बोल दिया। अम तुम्हारा जबान खींच लेगा। "11

यह तनाव उस साम्प्रदायिक भावना का परिणाम था जो विभाजन के नाम पर पनपी थी। हिन्दु मुस्लिम के इस विवाद को लेकर ही दुबला बाबू बदला लेने पर उतारू हो जाता है तथा पठानों पर प्रहार करने के लिए एक लोहे की छड ले आता है। परन्तु तब तक पठान डिब्बा छोडकर जा चुके होते हैं "निकल गए हरामी, मादर..... सब के सब निकल गये। फिर वह सिर पकड कर उठ खडा हुआ और चिल्लाकर बोला- तुमने उन्हे जाने क्यों दिया ? तुम सब नामर्द हो, बुजदिल।"12

दुबला बाबू के मन में उन पठान यात्रियों प्रति इतना अधिक द्वेष बढ गया था कि उसने ट्रेन में चढे एक अन्य पठान यात्री पर वार करके उसे मार गिराया। "सहसा उसके चेहरे पर लहू की दो तीन धारें एक साथ फूट पडी। झुटमुटे में मुझे उसके खुले होंठ और चमकते दांत नजर आए। वह दो एक बार "या अल्लाह" बुदबुदाया फिर उसके पैर लडखडा गए।"13

ये विभाजन से उपजे उस तनाव का ही परिणाम था कि वह दुबला बाबू मुसलमान यात्री की हत्या कर देता है और अन्त में सुकून से बैठ जाता है क्योंकि वह अब अपने आपको श्रेष्ठ समझ रहा था। उसके साथ बैठे अन्य यात्री भी मानो उसकी वीरता का बखान करते दिखाई दे रहे थे। "बडे जीवट वाले हो बाबू, दुबले-पतले हो पर गुर्दे वाले हो। बडी हिम्मत दिखाई है। तुमसे डरकर ही वे पठान डिब्बे में से निकल गए। यहां रहते तो एक न एक की खोपडी तुम जरूर दुरूस्त कर देते...।"14

पूरी कहानी साम्प्रदायिक तनाव, डर और दहशत को दिखाती है जो पात्र इन दंगों का शिकार हुए वे गरीब और असहाय थे। चाहे वह हिन्दु यात्री हों या मारा गया मुसलमान। गाडी जब मुस्लिम इलाके में होती तो मुस्लिम लोग बेफिक्र हो जाते हैं और जब हिन्दु इलाके में होती है तो हिन्दु लोग बेफिक्र होकर मुसलमानों पर टूट पडते हैं जब तक ट्रेन पाकिस्तान में थी वह पाकिस्तानी ट्रेन थी। वही ट्रेन हिन्दुस्तानी सरहद में घुसते ही हिन्दुस्तानी हो गई। पाकिस्तान में सफर करते वक्त दुबला बाबू भयभीत नजर आ रहे थे। वहीं पठान लोगों ने हिन्दु यात्रियों से दुर्व्यवहार किया। दूसरी तरफ हिन्दुस्तान में दुबला बाबू ने मुस्लिम मुसाफिर के साथ क्रूर अमानवीय व्यवहार किया। इस प्रकार यह कहानी विभाजनकालीन साम्प्रदायिक दंगो का अमानवीय चित्र है।

निष्कर्षः-

"अमृतसर आ गया है" कहानी स्वतन्त्रता के समय के भयावह सच को मार्मिक रूप से अभिव्यक्त करती है। यह विभाजन की आड में साम्प्रदायिकता की तस्वीर प्रस्तुत करती है। उस समय तत्कालीन परिवेश, उस समय के व्यक्तियों की साम्प्रदायिक सोच, तनाव और दहशत को पूरी शिदद्त से छोटी-छोटी घटनाओं व दृश्यों के माध्यम से पाठक के मानस पटल पर अंकित करने में यह कहानी पूरी तरह समर्थ है। देश विभाजन के समय की परिस्थितियों को इस कहानी माध्यम से बहुत ही जींवत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भः-

1. हिन्दी उपन्यास और देश विभाजन, करिश्मा पठान, रोली प्रकाशन, संस्करण प्र0 2016, कानपुर, पृष्ठ-40
2. वही पृष्ठ-55
3. विभाजन की हकीकतः कथा संदर्भ, डॉ. मेराज अहमद, वाडमय बुक्स, प्रथम संस्करण-2015, पृष्ठ-44
4. भीष्म साहनी की कहानियां- अमृतसर आ गया है, आः प्रकाशन, पंचकुला (हरियाणा), संस्करण-2017
5. वही पृष्ठ-53
6. वही पृष्ठ-55
7. वही पृष्ठ-55
8. वही पृष्ठ-57
9. वही पृष्ठ-58
10. वही पृष्ठ-58
11. वही पृष्ठ-58
12. वही पृष्ठ-59

13. वही पृष्ठ-61

14. वही पृष्ठ-62

Corresponding Author

Babita*

M.A. (Hindi) NET JRF, Hisar

kuldeep786soni@gmail.com